

DPN 6102

Title : नित्यकर्म विधि NITYA KARMA VIDHI

Run. No. 6793

Cat. No. III

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 17.5 x 8

Folios 20 + 3 Lines ( in a page ) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor पशुपतिमान पःमाय

Date: NS / SS / VS / KS 967

Ruler / place Paṣupati mān Pahmāy

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyāsaphu / Only Photocopy

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

\* ॐ नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुवे नमः ॥ ॥ श्री कुवजिका देवी नमः ॥ ॥ अथ स्नान  
विधि ॥ ॥ लाहा तुति रत्नाल सिय ॥ नो सिय ॥



॥ सम्बत् ॥ ॥ गते षडे रामावासांन्के दसंभ्यां मार्गशुक्लके ॥ उत्तराभद्र नक्षत्रे आकषेयू रवौ दिने ॥  
बखत्मान मीमान कुलमानोदय मानका ॥ श्री देव्या प्रसादेन तन्मन्त्रं च सदर्शनं ॥ नित्या-  
चनार्थं तेषां वै वीरधरो हे लील्लिखत् ॥

△ सम्बत् ५६७ आषाढ सुदि १०/११ शुक्रवार. ध्व कुण्डु ज्योतिमानसिं श्रीधर स्ववादाया सिद्धिलक्ष्मी  
कुण्डे कोदे विरेया चक्रप्रभायात दिक्षा विमा श्रीगुरु इस्वरानन्द उपाध्या पूजाओरि कोहिटिया  
कुलसुन्दर जुलो ॥ शुभ ॥



[illegible]











श्री उपवकाये नमः ॥ उँ चँ कौँ मं हं ताजिकाये ॥ श्री पश्चिमवकाये नमः  
 ॥ उँ शक्तिरविचैकाहनाय श्री पञ्चापनवकाये नमः ॥ उँ नमो एगव  
 ती कृतकमलाये ॥ श्री रुद्राय नमः ॥ उँ शं कृष्णिकाये कूलदीपाये ॥  
 श्री भिन्नसत्त्वाहा ॥ उँ शं कौँ कौँ वचनमिखं श्री भिषाय वषट् ॥ उँ शं  
 पञ्चापनवकाये नमः ॥ श्री कवचाय ह्रीं ॥ उँ शं कौँ चँ मं  
 हं ताजिकाये ॥ श्री नवगुणाय वषट् ॥ उँ शं किति रविचैकाहनाय नमः

क्लायरुह ॥ ॥ विरूपाक्षाय ॥ अथाज कौँ स्वाहा ॥ लसगय ॥ हँ सत्त्वा  
 हा ॥ उँ मं ॥ कृष्णं रसभनविषयकस्तु ॥ रसभनविषयक ॥ ॥ कं  
 पनदानकाय्या ॥ उँ शं ॥ उँ कौँ कौँ ॥ स्वाहा १० विरूपाक्षाय ॥  
 निवर्त्तिकलाये नमः ॥ पुष्टिकाकलाये नमः ॥ विशाकलाये नमः ॥ सात्त्विक  
 लाये नमः ॥ सूक्तिकलाये नमः ॥ महिमहिकलाये नमः ॥ नाटिमहिकला  
 ये नमः ॥ पृथ्वीस्थानमः ॥ सूक्तकलाये नमः ॥ हिरवाक्कायस्थानमः







ॐ श्रीं सुः श्रीसूर्याय नमः ३ श्रीं सनायाय नमः ३ ॐ श्रीं सुः श्रीसदाभिः  
 वाय नमः ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमः ॥ संध्याय नमः ३ ॥ कृत्वा विमर्शने स्वस्मान्  
 वासाय नमः ॥ ॥ ॐ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमः ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥  
 नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥  
 नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥  
 नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥  
 नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥ नमोऽस्त्य ३ ॥

के हाय ॥ आत्मने सर्वदयं च पुनः कृदी ॥ ॥ विधत्ततिय ॥ आत्मने च नतम  
 ॥ स्वात्मने च नतम ॥ आत्मने च नतम ॥ आत्मने च नतम ॥ आत्मने च नतम  
 श्रीसूर्याय नमः ॥ ॥ पद्मास्त्याय नमः ॥ ॥ ॐ श्रीं सुः श्रीसूर्याय नमः ॥ पुनः  
 किं संहिताय नमः ॥ ॥ ॐ श्रीं सुः श्रीसूर्याय नमः ॥ ॥ ॐ श्रीं सुः श्रीसूर्याय नमः ॥  
 यदीमहि तन्नीलाय नमः ॥ ॥ ॐ श्रीं सुः श्रीसूर्याय नमः ॥ ॥ ॐ श्रीं सुः श्रीसूर्याय नमः ॥  
 गृहास्त्याय नमः ॥ ॥ ॐ श्रीं सुः श्रीसूर्याय नमः ॥ ॥ ॐ श्रीं सुः श्रीसूर्याय नमः ॥



नाजायदभयनमः॥ लक्ष्मीसुक्तिस्तुतिताय॥ ॐ नमोऽस्तुते॥ गभयती॥ वि  
कुतूपायविग्रहं ताजायतायधीमहिः॥ तन्नीलक्ष्मीप्रदायता॥ आय ॥  
ॐ कौस्तुभाहा॥ १० ॥ ॐ देवदेव्यै नमः॥ ॥ श्रीसदाशिवाय नमः॥ ॥ वसुः  
स्तायनमः॥ ॐ कौस्तुभः॥ श्रीसदाशिवाय नमः॥ सर्वपीअधियाय॥ कौस्तुभाय  
ॐ देवदेव्यै नमः॥ गभयती॥ शिवनूपायविग्रहं सदाशिवायधीमहिः॥ तन्नील  
वप्रदायता॥ जायता॥ ॐ कौस्तुभः॥ १० ॥ ॐ देवदेव्यै नमः॥

स्तुति॥ नकवर्धमाहातं॥ नकपद्मसुधमिही॥ सुफलप्रथमा नूटं॥  
ग्रहनाडीनमाम्यहं॥ नाजायधीनमस्तुत्यं॥ नज॥ केवनालुसं॥ देवीसुज  
स्वतीं देवः॥ गताजयमूनीयथा॥ यस्तुहस्तं॥ गजबकुं॥ गनूअयस्यवाहनं॥ स  
भक्त्या तु कल्याणी॥ यमनाशजनादनेः॥ शिवीशिवकरीभक्तं॥ शिवत्मा  
नीशिवीरुमः॥ शिवमार्जुयनेतानी॥ पुष्टामिमिसदाशिवं॥ पायहं पायक  
मोहि॥ पायात्मापायसं॥ एव॥ गहिमी॥ यदु॥ पीका॥ दे॥ सर्वपायाह॥ जाह॥ श्री



नमः सवनीनाम्निः तु भवसुवर्दीममस्मात्कालेन तार्धेन नक्षत्रं दृश्यते भव  
 नी॥ ॥ न्यासीलिकाय॥ ५ अस्माय रुत॥ ॥ स्वस्त्वानेवासा रव्यं तु॥ मंछेल  
 सुवाकस्वानः सूर्यनानायदाया केवाकस्वानकायाऽचक्रय॥ ६०॥ ६०॥  
 १०० नमः श्रीकृष्णिकादर्थे नमः॥ ॥ संवत् अर्धायययलिमलाहृतयऽ  
 कुशयाऽजाकिडापुचलतय॥ ॥ नमिष्य॥ ॥ ज्ञां अस्मत्तत्वाय स्वाहा॥ ॥ ज्ञीं वि  
 द्यात्तत्वाय स्वाहा॥ ॥ ज्ञूं भिन्नत्वाय स्वाहा॥ ॥ न्यासयति सि॥ ॥ तत्तादुवमोचना॥

अर्धपापपृष्ठा॥ आधालकाकनमः॥ ॥ लघनहाय॥ किं द्विशिष्टेकादू  
 नायकमस्माय रुत॥ ॥ सुखितय॥ नमो रगवत रुतकमलाये नमः॥ ॥  
 दर्शकय॥ युक्तां धुखेधुसंरुतं मस्य खनसमद्वी॥ अये निगमाहापापुं पी  
 र्धनसमावहं॥ ॥ विष्णुमय॥ ॥ लैल्लै पूल्लै ल्लै॥ ॥ मस्य मदानकाय  
 याऽधमया॥ वौर्वी वूँव वौव वृक्षमयमावकाय सुवादीनमः॥ ॥ कौं कौं कौं  
 कौं कृष्णमयमावकाय सुवादीनमः॥ ॥ भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं भं



भावकार्ये सुखादवीनमा ॥ किंभलतया ॥ कुंजी स्वाहा ॥ डाडाकासति  
 डाडाखडाकासनसुतगमा ॥ उँजौं श्रीं कुंजी ॥ डापा ॥ श्रीं स्वाहा ॥ १० ॥  
 किंभलतया ॥ उँकालासनायपादकां ॥ ॥ किंभलतया ॥ डाडाकासति  
 डाडाकासति ॥ उँजौं श्रीं कुंजी ॥ यत्न २ ध्यान २ तप २ नृपचत २ पुचत २ क  
 रवम २ उम २ चातय २ विद्यातय २ विधि २ रुत २ श्रीमहाकोनिकाविधि  
 श्रीपादकां ॥ ॥ किंभलतया ॥ उँजौं कुंजी ॥ अनन्तसिद्धिहे जवानन्तविना

धियतय श्रीमहाविद्यानाथश्वरी ॥ सुखी अर्चयतु दानकाय श्रीपादकां ॥  
 जौं हृदयायनमः ॥ जौं भित्तयनमः ॥ जौं कीर्त्यायनमः ॥ जौं कवचायनमः ॥ जौं नेत्राय  
 नमः ॥ जौं मूलायनमः ॥ ॥ विद्यानाथ ॥ आवाहातादिचतुर्नाकगुण्यनमः ॥  
 अन्तःकानि मूलां प्रस्था ॥ ॥ नाथविय ॥ नमः श्रीनाथाय नमः श्रीसिद्धिनाथाय  
 नमः श्रीकृष्णसनाथाय नमः ॥ दासोपादकां ॥ संप्रदाया ॥ मकुलायपादकां ॥ ती  
 षाया ॥ गंगाधरमूलायैवराभजवतिसुखी ॥ नवदसिंदूकाय श्रीजलः



सीनुमनिर्भिकूना॥ जाय॥ श्रीं स्वाहा॥ कि॥ भलतय॥ ह॥ श्रीं जलपागुलदा  
 नकार्ये श्रीं पादूकी॥ श्रीं हृदयै नमः॥ श्रीं वाहनादिचरनादुत्तमै नमः॥  
 (धनू॥ श्रीं मूर्ध्नि प्रणमः॥ ॥ नासि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥  
 वाचं पूजानिमित्तार्थं श्रीं कूलमार्ते धृतं तेन वाचं श्रीं श्रीं सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥  
 सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥  
 सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥

नाचकं तत्पदं दग्धितं जनः स श्रीं गुचूचनमा॥ गुचूपादूकं पूजयामास॥ गुचू  
 वृंका॥ गुचूविष्णु॥ गुचूदेवमहोदधे॥ गुचूदेवज्ञातसर्वं॥ श्रीं गुचूचनमा॥ स  
 लाङ्गुलतया॥ ॥ श्रीं सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥  
 कां॥ ॥ श्रीं सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥  
 ॥ किं हि रविश्चंद्रकादनायकं श्रीं सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥  
 स्वाहा॥ ॥ श्रीं सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥ सूर्योऽसि॥















बलि॥ ॐ विष्णु कृष्णि निष्कुं ते ला क्का कर्त्तनी कीं कामाद्रामिनी कीं कीं मा  
हाकारकानिनी उँ सो सध्या पादूकीं॥ बलिं॥ नमो रगवगी कुकृष्णि कार्ये उँ ऊँ  
कीं ऊँ धान नमो धानः कौं किं किं विष्णु श्री पादूकीं॥ बलिं॥ ह॥ आनन्द सकि  
हे नवानन्द विनाधियतये स॥ श्री यन्त्रिममूल ल्कान रदान काय श्री पादूकीं  
॥ बलिं॥ स॥ आनन्द सकि हे नवानन्द श्री साहा विद्यानाक्ष सनी॥ ह॥ श्री यन्त्रि  
ममूल ल्कान रदान काय श्री पादूकीं॥ बलिं॥ ह॥ स॥ आनन्द सकि हे नवान

न्द विनाधियतये स॥ ह॥ श्री यन्त्रिममूल ल्कान रदान काय भिवसकि स  
हिताय श्री पादूकीं॥ बलिं॥ ऊँ हृदयादियुजा॥ बलिं॥ आवाहतादि॥ यानि  
मडोदनस॥ ॥ यि पून पूजा॥ नक पद्मास्त्राय पादूकीं॥ उँ कीं सोः सोः कीं उँ श्री  
वाना श्री पून से रवी रदान काय श्री पादूकीं॥ बलिं॥ यद्मास्त्राय पादूकीं॥ उँ  
उत्तीं हँ रुद्र श्री उग्रतानाद विरदान काय श्री पादूकीं॥ बलिं॥ ॥ यद्मा  
स्त्राय पादूकीं॥ उँ उँ धुँ श्री गङ्गा काली देवी रदान काय श्री पादूकीं॥ बलिं॥



॥ श्रीवाहननादि ॥ ॥ यानिमज्जादनाम ॥ ॥ त्वाकमाहवलि ॥ ॐ कौं कीं कूं कं य  
 पालनाय ॥ वलिं ॥ श्री कीं कूलयूयवगुकनाथया ॥ वलिं ॥ गं गीं गूं गे ग्री कूलग  
 (दाश्वनाय ॥ वलिं ॥ यौ यीं यूं श्री सिद्धियागिनिथा ॥ वलिं ॥ ध्रुं श्री सिद्धिचाम  
 द्वाये ॥ वलिं ॥ ॐ कूं माहकर्णवीनमममधियतया ॥ वलिं ॥ ॥ सर्वथा मा  
 काश्मनिथा ॥ सर्वथा स्वर्गथा ॥ सर्वथा दुवथा ॥ वलिं ॥ सर्वथा हतथा ॥  
 सर्वथा पुतथा ॥ सर्वथा विष्मवथा ॥ सर्वथा नादसथा ॥ सर्वथा यदथा ॥

॥ सर्वथा किन्नरथा ॥ सर्वथा नागथा ॥ सर्वथामनूथा ॥ सर्वथा नृदवगा  
 था ॥ समद्रुनितप्रभं ह्यर्थं ॥ वलिं ॥ ॥ समस्तमनुविधिपी ॥ अपिथ ॥ सिं  
 हासुपिथि ॥ पिथ ॥ अपिथ ॥ कृपापदुय ॥ संडाहप्रसंदाह ॥ दिव्यसिद्धि समयचक्र  
 ॥ वलिं ॥ उक्तानकयत्किचिगु ॥ सर्वहृदयाय ॥ वलिं ॥ ॥ श्रीवाहननादि ॥ ॥  
 ॥ श्रीवाहननादि ॥ ॥ मधुलेखकेचित्पानतया ॥ ॥ धंयाय ॥ मतविय ॥  
 ॥ धंयनम ॥ दिपंनम ॥ ॥ गतामविशुसाधन ॥ कूं स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ नृनच







तं गीविजयां जया ह गवती दूवी भिवाणमस्तु विष्णु किं कजव लला प्रिनय  
 निवावादिनी लेनवी श्री कानी पिपूना यना यनम निमा ता कूमा नित्य सी गउं  
 का ना समा बूटा वज्र पद्मा पद्मिष्ठिता ॥ षट्पुका न गती दूवी श्री कूक्कि का कौ  
 न मा म्य हं ॥ पा ॥ पाय कर्मा नि पा या सा पा य स र व ग हि मां पु न्द रि का क  
 सर्व पा य रु श ह न ॥ अ न्य य स न र्ध ना क्ति त्व मे य स न र्ध म म् ग म्मा क्ता न र्ध रा ये  
 न न क न र्ध य न म स्तु मी ॥ ॥ आ वा ह न न न ज्ञा ना मि नु ज्ञा ना मि वि स र्क नी पू जा ये

व न ज्ञा ना मि रु म स्तु म न म स्तु मी ॥ ॥ न म विष्णु ॥ ॥ म हं उ म वा क म्मा हं  
 म वा द स्तु म का या ड ॥ उ का न न क पा द कां ॥ ॥ उ वा म वा द का य न य मि स  
 म ॥ अ न्ध र्ध पा गु नि र्ध क र्म म ॥ ॥ न म विष्णु ॥ ॥ अ म्मा य रु द्वा ॥ ॥ न म विष्णु  
 ॥ न म विष्णु ॥ ॥ श्री आ व स न न स्वा हा ॥ ॥ पा ॥ म वा द स्तु म का या ड ॥ ॥  
 म विष्णु ॥ ॥ कि हि र वि द्वा का ह ना य रु म्मा य रु द्वा ॥ ॥ उं श्री श्री कू  
 कौ कौ कू श्री श्री उं सं हा न म जं रु त्वा वि स र्ज न स्तु न वा सा र व क्ता ॥ ॥ ह्य



स्थाने दृष्ट्या लाया वलि ॥ ६६ ॥ दृष्ट्या लाया वलि ॥ सर्व दृष्ट्या लाया वलि  
 नासिया ॥ धर्म दृष्ट्या लाया वलि ॥ ॥ अथ ममेति कर्म दृष्ट्या  
 न दृष्ट्या लाया वलि ॥ ॥ अथ ममेति कर्म दृष्ट्या  
 ममेति नम ॥ ॥ अथ ममेति कर्म दृष्ट्या  
 निनम ॥ ॥ अथ ममेति कर्म दृष्ट्या  
 धर्म दृष्ट्या लाया वलि ॥ ॥ अथ ममेति कर्म दृष्ट्या  
 अथ ममेति कर्म दृष्ट्या ॥ ॥ अथ ममेति कर्म दृष्ट्या



अथ द्वितीया ॥ चतुष्टयविंशतिक्रमाधारा ॥ मया विंशतिकर्मकां वीरचक्रस्मिन्निर्दिष्टा ॥ मन्त्रोक्तः  
 नमामेह ॥ नमोस्तु चक्रमध्यस्थे ॥ नमोस्तु ज्ञानदायक ॥ नमोस्तु भैरवरूपाय ॥ नमोस्तु जवतारक ॥  
 अष्टाष्टकत्रुजोगिन्या बहुकानां तथैव च भैरवानां निर्दिष्टं ॥ मेका कालं रात्रां स्पृहं ॥  
 अथ तृतीया ॥ ॥ ऐं ॥ अविनाशो भवेद्देह ॥ मजरा मरमेव च ॥ महाबलं वजुदेहं ॥ राजश्रीरेकं  
 चक्रं ॥ सत्रुना सोयसो हृदि ॥ लक्ष्मीसंततिवर्धनं ॥ महापुत्रि भवेत्तस्य आयुः श्रीकांतिवर्धनं ॥  
 रसायनं तु सर्वस्य ॥ देवदेवी मुनिर्मितं ॥ परावृत्तरसं दिव्यं पीयतां भवभैरजं ॥ नन्दकुलस्य  
 गिनो ॥ नन्दकुलपुत्रका ॥ नन्दु श्रीकुलाचार्यं ये चान्ये नमो नमः ॥ ॥ अथ चतुर्थी ॥  
 ॐ जयंति देव्या हरपादपंकजं ॥ प्रसन्ना ममृतं तु प्रियं यकं ॥ अनन्तसंसारगतिप्रमोदकं ॥ नमा  
 मिच्छास्तु कथं योगिनिगर्गा ॥ योगिनी चक्रमध्ये स्थिता ॥ मात्रमराडले विहितं ॥ नमामि सिरसा  
 नार्थं ॥ भैरवं भैरवप्रीयं ॥ आपदादुरिताद्योरा समयाचारलंघना ॥ सर्वेति च व्यपोहनु ॥ दिव्य  
 सम्यक्ता ॥ गतं यन्मया धर्मं क्तं दत्तं म्यां मार्गं कुक्क ॥ उत जायते नक्षत्रं  
 अथ यं यजुर्वेदिने ॥ यखत्मान हीमान् कुलमानां दयमानका ॥ श्रीद्व्याय  
 सादनं तन्मैत्रं च सदर्शनं ॥ तिष्ठानार्थं तेषां वेदीनध्याहली लिखता ॥  
 चक्रस्य मेलना ॥ संपूजकानां प्रतिपालकानां ॥ जितेन्द्रिया नाचतपोधनानां ॥ दिसेय रासस्य  
 कुलस्य राज्ञां ॥ करोतु सा त्रिभवानं कुलसः ॥ नन्दु साधककुलाने निमानि सिद्धा ॥ सा चापतं  
 तु ॥



अथ द्वितीया ॥ अष्टाविंशतिक्रमाधारा ॥ मया विंशतिकर्मकां वीरचक्रस्थितनिर्वा ॥ मस्तास  
नमा मेहं ॥ नमस्ते चक्रमध्यस्थे ॥ नमस्ते ज्ञानदायक ॥ नमस्ते भैरवरूपाय ॥ नमस्ते अवतारक ॥  
अष्टाष्टकत्रु जोगिन्या बहुकौनार्ति धैवच भैरवानां निर्द्वचक्र ॥ मेका कालरागाम्पहं ॥  
अथ तृतीया ॥ ॥ ऐं ज अविनासो भवेद्देह ॥ मजरा मरमेव च ॥ महाबलं वजुदेहं ॥ राजश्री रेक  
चक्रं ॥ सत्रुना सोमसो हृदि ॥ लक्ष्मी सतति वर्धनं ॥ महापुलि भवेत्तस्य आयु श्रीका त्रिवर्धनं ॥  
रसायनं सर्वस्य ॥ देवदेवी मुनिर्मितं ॥ मरुत रसं दिव्यं पीयतां भवभैरव ॥ नन्दनुकुलस्यो  
गिनो ॥ नन्दनुकुलपुत्रका ॥ नन्दसु श्रीकुलाचार्य मे चाम्पिनमो नमः ॥ ॥ अथ चतुर्थी ॥  
ऐं ज जयन्ति देवा हरपादपंकजं ॥ प्रसन्ना ममृतं तृप्तिदायकं ॥ अनन्त संसारगति प्रमोदकं ॥ नमा

निचालाद्वक्यो गिनिगर्गा ॥ योगिनी चक्रमध्ये स्थी ॥ मात्रमराडले विहितं ॥ नमामि सिरसा  
नार्थ ॥ भैरवं भैरवप्रीयं ॥ आपदादुरिताद्योरा समयाचारलेयना ॥ सर्वेति च व्यपोहनु ॥ दिव्य  
सम्यक्ता ॥ गतं यन्मया धर्मं क दसं म्यां मार्गं कुक्क ॥ उत या एव न द्रुप  
अवश्यं पूज्यो दिने ॥ यखत्मान हीमान कुलमाना दयमानका ॥ श्रीदयाप  
सादन तत्तत्प्रवसदर्थनं ॥ तिल्याचनार्थं तेषां वीनधजा हलीलिषता ॥  
चक्रस्य मेलना ॥ संपूजकानां प्रतिपालकानां ॥ जितेन्द्रियानां च तपोधनानां ॥ देसं स्य रासस्य  
कुलस्य राज्ञां ॥ करेण सात्रि भवानं कुलस ॥ नन्दनुसा धक कुलाने निमानि लिखा ॥ साचापतं  
तु ॥



